Advanced International Journal for Research (AIJFR)
E-ISSN: 3048-7641 ● Website: www.aijfr.com ● Email: editor@aijfr.com

# निरंकारी महिलाओं की प्रस्थिति: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन।

**ललिता कश्यप[1], प्रोफेसर हेमेन्द्र सिंह[2]**

[1]शोधार्थी के.जी.के. कालेज मुरादाबादए महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविधालयए बरेलीए उत्तर प्रदेश
[2]शोध पर्यवेक्षकए समाजशास्त्र विभाग के.जी.के. कालेज मुरादाबादए महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड विश्वविधालयए बरेलीए उत्तर प्रदेश

**Abstract**

निरंकारी आंदोलन से सलंग्नित महिलाओं की प्रस्थिति में परिवर्तन के अध्ययन पर यह शोध पत्र आधारित है। वैदिक काल से आधुनिक काल तक की अवधि में भारत के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा धार्मिक परिदृश्य में अनेक परिवर्तन दृष्टिगोचर हुए हैं और इस परिवर्तन के प्रभाव से महिलाएं भी अछूती नहीं रही है। समाज में महिलाओं की जो स्थिति हमें वर्तमान में देखने को मिलती है वह उन्होंने अपनी बुद्धिमत्ता एवं कौशल के बल पर ही अर्जित की है किंतु पुरुष प्रधान समाज होने के कारण आज भी महिलाओं पर अत्याचार हो रहे हैं तथा समाज में महिलाओं के साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार किया जा रहा है। अग्रवाल बिना, बत्रा सुदेश, घनश्याम शाह इत्यादि समाजशास्त्रियों के अनुसार महिलाओं के ऊपर हुए और हो रहे अत्याचारों अपेक्षापूर्ण व्यवहार एवं उनके दमन को रोकने के लिए, महिलाओं के पुनर्स्थापना एवं महिलाओं की दशा में सुधार के लिए अनेक प्रयास किए गए हैं किंतु अभी भी महिलाओं की स्थिति निम्नतर ही देखने को मिलती है।

जौली सुरजीत कौर, सिद्वार्थ रंजन, कविता रानी, द्वारा निरंकारी मिशन पर लिखे गये शोध ग्रंथ को दृष्टिगत करने के उपरांत तथा निरंकारियों द्वारा आयेजित सभाओं (सत्संग) में जाने तथा निरंकारी महिलाओं से वार्तालाप से प्रतीत होता है कि निरंकारी महिलाओं की प्रस्थिति में व्यापक सुधार हो रहा है। जिससे यह पता चलता है कि निरंकारियों में महिलाओं के प्रति कितना आदर एवं सम्मान है साथ ही यह भी कि निरंकारी संसार में महिलाओं को कितना उच्च स्थान प्राप्त है।

अब मेरा उद्देश्य यह है कि रामपुर जिले की 300 निरंकारी महिलाओं पर विस्तृत अध्ययन करूँ जिससे जो अध्ययन मैंने किया है वो स्थापित हो सके और महिलाओं की वर्तमान प्रस्थिति के संदर्भ में निष्कर्ष प्राप्त हो सके।

**Keywords:** निरंकारी, महिलाओं की प्रस्थिति, धर्मिक आंदोलन

## 1. Introduction

पुर्नजागरण काल जो स्वतंत्रता के पूर्व एवं प्रथम स्वतंत्रता आंदोलन के बीच का लगभग समय माना जाता है, इसमें स्त्रियों की स्थिति को सुधारने के बहुत प्रयास किए गए जिनमें राजा राममोहन राय, दयानंद सरस्वती, ईश्वर चंद्र विद्यासागर, महात्मा गांधी, महादेव रानाडे, सरोजिनी नायडू इत्यादि समाज सुधारकों ने अग्रणी भूमिका निभाई। राजा राममोहन राय को भारत में स्त्रियों की दशा सुधारने के लिए अग्रदूत माना जाता है, उनका मानना है कि स्त्रियों को शिक्षा से वंचित रखा जाना भी अपराध है, वे सती प्रथा को समाज के कलंक के रूप में मानते थे तो उन्होंने इसके लिए ब्रह्म समाज आंदोलन चलाया और स्त्रियों को सती प्रथा से निजात दिलाई।

महात्मा गांधी जी हमेशा स्त्रियों को पुरुषों से श्रेष्ठ मानते थे, गांधी जी के अनुसार महिलाओं को शिथिल और अबला कहना पुरुष की विकृत मानसिकता एवं परिसीमितता का परिचायक है, वह मानते थे की महिलाओं में पुरुष से अधिक नैतिक शक्ति है जो सभी शक्तियों से अधिक महत्वपूर्ण है।

निरंकारी आंदोलन का भी विकास 1816 से माना जाता है तथा बाबा बूटा सिंह जी के द्वारा इस मिशन की स्थापना 25 मई 1929 से शुरू हुआ माना जाता है। यह एक सिख धर्म का ही सुधार आंदोलन है लेकिन वर्तमान में यह सभी धर्म जाति संप्रदाय के लिए खुला है, इसमें सभी मनुष्यों का स्वागत किया जाता है इसलिए इसको एक सिख धर्म का आंदोलन कहना अब अनुचित ही होगा। यह एक मानवता का मिशन है जिसमें महिलाओं की प्रस्थिति में भी व्यापक सुधार हुआ है वर्तमान में इसकी छठी गुरु सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज हैं, उनके सानिध्य में ही यह आंदोलन चल रहा है। इस आंदोलन की संगोष्ठी (सत्संग) में जो भी व्यक्ति भाग लेते हैं उनको सभी को निरंकारी कहा जाता है।

**संकल्पनात्मक शब्दों की व्याख्या**

निरंकारी- यह सिख धर्म का एक संप्रदाय है, पंजाब में बाबा दयाल दास द्वारा स्थापित सिख धर्म में एक सुधार आंदोलन था वर्तमान में समस्त धर्म के, समस्त जातियों के व्यक्ति इस आंदोलन से जुडे हैं इसके अनुयायियों को निरंकारी कहा जाता है। वर्तमान में इस मिशन का संचालन सदगुरू माता सुदीक्षा जी महाराज के द्वारा किया जा रहा है। इनके द्वारा आयोजित सत्संग में जो व्यक्ति जाते हैं, निरंकारी कहलाते हैं। महिलाओं की प्रस्थिति- निरंकारी आंदोलन से जुडी महिलायें अपना जीवन कैसे व्यतीत कर रही हैं।

धार्मिक आंदोलन- इसका तात्पर्य उन आंदोलनों से है जो धार्मिक कुरीतियों में सुधार के लिये उत्तरदायी है एवं जिन्हें विधि एवं विभिन्न सामाजिक संगठनों द्वारा निरंतर संसोधन के पश्चात सामाजिक सदभाव समानता एवं तार्किकता पर आधारित किया गया है।

अध्ययन के उद्देश्य प्रस्तुत रूपरेखा में भारत में महिलाओं के सशक्तिकरण पर हुये सामाजिक धार्मिक आंदोलनों पर ध्यान आकर्षित किया गया है। महिलाओं की स्थिति वैदिक काल के बाद से ही निम्न होने लगी थी, इसके लिये अनेक आंदोलन चलाये गये और स्त्रियों को रूढियों से मुक्त भी कराया गया। वर्तमान में निरंकारी आंदोलन में महिलाओं की दिशा तथा दशा कैसी है ज्ञात करना ही इस शोध पत्र का उद्देश्य है।

**अध्ययन से संबंधित साहित्यिक समीक्षा**

**१.** भारतीय समाज में स्त्रियाँ सदैव पूजनीय तथा वंदनीय रही हैं। वैदिक काल में महिलाओं की शिक्षा पर भी उतना ही ध्यान दिया जाता था जितना कि पुरुषों की शिक्षा पर। बौधायन के मत के अनुसार कन्या का विवाह जल्दी कर देना चाहिए ८ या १० वर्ष की उम्र में, इसी से ही आगे बाल - विवाह जैसी प्रथा सामने आई और विधवाओं की दुर्दशा और सती प्रथा जैसी कुरीतियाँ प्रारंभ हो गयीं। ३० वर्ष के पुरुष के लिए १२ वर्ष की कन्या से विवाह की बात कही गई है। इससे स्त्री अपनी युवावस्था में ही विधवा हो जाती थी। **(अग्रवाल बीना)**

**२.** नारी के सम्मान की रक्षा करने वाले कानून के संरक्षण की बात कही है- स्त्रियों के भरण - पोषण का अधिकार, विवाह – विच्छेद, दहेज-प्रथा, प्रसूति लाभ, कारखाना अधिनियम, संपत्ति में मालिकाना हक।
स्त्री मानसिक रूप से भी दृढ़ हो। **(बत्रा सुदेश)**

३. अपने नाटक 'नीलदेवी' में पश्चिमी सभ्यता को नकारते हुए भारतीयता को स्वीकार किया। समाज सुधार में महाराष्ट्र से जो लहर उठी भारतीय स्त्री के उत्थान में एक नया मोड़ दिया (P-९८)। बेकिमचंद्र, रविंद्रनाथ ठाकुर, शरतचंद्र आदि लेखकों ने अपने साहित्य के द्धारा नारी अस्मिता और स्वचेतना को जागृत किया।
महिलाओं को घर में बचपन से ही सम्मान मिलना चाहिए। अभी तक लिखा गया साहित्य यापि नारी की स्थिति को विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त करता है, फिर भी उसके संघर्ष, विकास की आकांक्षा, स्वाभिमानी चेतना और सफलता का चित्रण शेष है। रचनाकारों को भी एक विशिष्ट रचना बिंदु तक उपयुक्त 'विजन' या 'दृष्टि' की तलाश करनी चाहिए। (भारतेन्दु)

4. हर वर्ग-समाज का अपना एक विभ्रम होता है और वह मुख्यत: उसी में पलता भी है। उस वर्ग का प्रभाव पूरे जीवन छाया रहता है स्त्री भी उसी वर्ग का हिस्सा है। अगर स्त्री इतिहास में अपने अच्छे या बुरे परायों की करतूतों की देन बताकर अतीत को वर्तमान से अलग करना।

स्त्री को स्वयं ही आगे बढ़कर अपने अतीत को बदलना होगा। **(श्रीवास्तव रवि)**

5. महिलाओं के अध्ययन में महिलाओं के आंदोलन भी आ जाते हैं, भारत में महिलाओं के आंदोलनों संबंधित शोध आधारित लेखन अपेक्षाकृत कम है। पुरुष वर्चस्व (प्रभुत्व) के प्रति महिलाओं का प्रतिरोध पश्चिमी शिक्षा की ही उपज है। इनका मानना है कि पश्चिमी समाज तथा भारतीय समाज में व्यापक अन्तर है जिसके कारण नारीवाद के मुद्दे भी दोनों जगह अलग-अलग हैं। परिवार जाति धर्म से परे महिलाओं को एक नई पहचान मिलनी चाहिए। अगर सांस्कृतिक परंपराओं का विरोध करना पड़े तो वह भी उचित होगा वस महिला की गरिमा पर आंच न आए। **(घनश्याम शाह)**

**6.** गांधी जी महिलाओं को कमजोर नहीं मानते हैं वे कहते हैं, वे कहते हैं महिला कोई दया करने वाली वस्तु नहीं है, वे आत्म-चेतन है सामाजिक सुधार में महिला अग्रणी रही है, शारीरिक रूप से तो महिला कमजोर हो सकती है, किंतु बौद्धिक तथा आत्मिक रूप से महिला अवला नहीं है। संघ परिवार के कुछ नेतागणों ने महिलाओं के बारे में कहा है कि वे अपनी पत्नी तथा माता होने के धर्म को अच्छे से निभाते हुए कोई भी कार्य कर सकती हैं। ज्यादातर पितृसत्तात्मक संरचनाओं और मूल्य व्यवस्थाओं पर ध्यान दिया जाता है इन परंपराओं की रक्षा करने के लिए स्त्रियों को लामबंद किया जाता है, भारत में स्त्रियों को घर परिवार और समाज में पहले से एक गरिमापूर्ण स्थान प्राप्त है। इसे केवल पुनर्स्थापित और पुनसमर्पित किये जाने की आवश्यकता है। **(किश्वर मधु)**

**7.** नेताओं ने संदेश दिया है कि महिलाएँ अपने माँ तथा पत्नी धर्म को सही से निभाते हुए किसी भी आंदोलन में सहभागिता कर सकतीं हैं। यह ऐसी व्यवस्था करता है कि महिलाएँ खुद की चारदीवारी तक सीमित ना रहें, अपितु अपने को एक संपूर्ण नागरिक मानें। आगे लिखती हैं- महिलाओं में महिला की प्रवृत्ति बचपन से नहीं होती बल्कि पर्यावरण वातावरण उसे महिला (समाज द्धारा) बना दिया जाता है उसके मूल्य मानदण्ड निर्धारित कर दिये जाते हैं। **(बसु अमृता)**

७

**8.** महिलावादी आंदोलन स्त्रियों की मुक्ति और समानता के साझा लक्ष्य को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं। स्वतंत्रता आंदोलन के दौरा सुधार आंदोलन अनेक पुरूषों द्धारा चलाए गए, राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र वि|klkगर] महादेव गोविंद रानाडे, बेहरामजी मलबारी जैसे समाज सुधारकों ने समाज में विधमान सामाजिक, धार्मिक कुरीतियों को समाप्त करने का प्रयास किया। **(देसाई नीरा)**

9. दा निरंकारी एण्ड नामधारी मूवमेंट्स इन पंजाब डयुरिंग दा नाइनटीथ सेन्चुयरी यह अध्ययन पंजाब में किया गया है। इसका उद्देश्य निरंकारियों तथा नामधारियों के मध्य जो अन्तर है उसको जानने का प्रयास किया गया है इसकी खोज में निरंकारी तथा नामधारी दोनों ही धार्मिक सिक्ख सुधार आंदोलन हैं, जहाँ नामधारी सिक्खों के आदि गुरूओं की वाणी को मानते हैं वहीं निरंकारी बाबा अवतार सिंह जी के फरमानों पर चलते हैं तथा निरंकार की उपासना किया करते हैं। नामधारी जहाँ केवल सिक्ख संप्रदाय से संबंधित हैं वहीं निरंकारी मिशन में किसी भी धर्म, मजहब, जाति के व्यक्ति आ सकते हैं। (जौली सुरजीत कौर 2000)

10. निरंकारी संप्रदाय मूलतः एक आध्यात्मिक संप्रदाय है। इस संप्रदाय के साधु (सन्त) उन सभी सामाजिक कार्यों में सहयोग प्रदान करते हैं जिससे सामाजिक प्रगति होती है, ये लोग पोलियो ड्राप्स वितरण, रक्तदान शिविर, नेत्र शिविर तथा स्वास्थ्य शिविर आदि में स्वतः स्वंयसेवक के रूप में समाज सेवा के भाव से योगदान करते हैं। नारी के प्रति इनके मन में श्रद्धा का भाव है। ये लोग नारी को पुरूष के समकक्ष स्थान दिलाने की दिशा में लगातार प्रयास कर रहे हैं तथा ये सफल भी हो रहे हैं। (रंजन सिद्धार्थ 2010)

11. निरंकारी मिशन का समाज पर क्या प्रभाव पड़ा है मिशन समाज में अनेक योगदान दे रहा है, इसके अनुयायियों में अथाह प्रेम है समाज तथा मिशन दोनों ही जगह निरंकारी प्यार, प्रीत के साथ रहते हैं। आत्मा को ईश्वरीय अनुभूति, परमात्मा की जानकारी, अज्ञान के अंधेरे से प्रकाश की ओर जाने का रास्ता मिशन द्वारा दिखाया जाता है। आध्यात्मिकता की तरफ मानव को मोड़ा गया है। (रानी कविता 2022)

अब मेरा यह उद्देश्य है कि रामपुर जिले की 300 महिलाओं का विस्तृत अध्ययन करूँ जिससे जो अध्ययन मैंने किया है वो स्थापित हो सके और निरंकारी आंदोलन से संलग्नित महिलाओं की प्रस्थिति के संदर्भ में निष्कर्ष प्राप्त हो सकें। अब तक मेरी 300 महिलाओं से वार्तालाप हुई है। जिसका विवरण निम्न है।

**निरंकारी आंदोलन से महिलाओं के संलग्नित होने का कारण**

| क्रम सं0 | कारण | संख्या | प्रतिशत : |
|---|---|---|---|
| 1 | जन्म निरंकारी परिवार में | 80 | 26.67 % |
| 2 | विवाह निरंकारी परिवार में | 60 | 20 % |
| 3 | किसी कामना के पूर्ण होने पर | 100 | 33.33 % |
| 4 | निरंकारी अनुयायियों से प्रभावित होकर | 60 | 20 % |
| | योग | 300 | 100 % |

उपर्युक्त सारणी के अध्ययन से यह ज्ञात हुआ है कि निरंकारी मिशन में सबसे ज्यादा महिलाएं आध्यात्मिक कारण से जुड़ी हैं जिनकी संख्या 50% है और इसके बाद निरंकारियों द्वारा प्रोत्साहित किए जाने पर 30 महिलाएं मिशन से जुड़ी हैं, जिससे यह ज्ञात होता है कि निरंकारी आंदोलन महिलाओं की आध्यात्मिक प्रकृति में सहायक है।

**निरंकारी आंदोलन से संलग्नित महिलाओं का शैक्षिक स्तर**

| क्रम सं0 | शिक्षा वर्ग | संख्या | प्रतिशत : |
|---|---|---|---|
| 1 | अशिक्षित | 40 | 13.33 % |
| 2 | प्राथमिक शिक्षा (1 से 8 वीं) | 50 | 16.67 % |
| 3 | माध्यमिक शिक्षा 10. 12) | 80 | 26.67 % |
| 4 | उच्च शिक्षा – स्नातक | 100 | 33.33 % |
| 5 | परास्नातक | 25 | 6.66 % |
| 6 | शोधस्तर | 05 | 1.66 % |
| 7 | योग | 300 | 100 % |

सारणी के अध्ययन से स्पष्ट है कि निरंकारी महिलाओं का शैक्षिक स्तर उच्च स्तरीय है, क्योंकि प्रतिदर्शित निरंकारियों में से अधिकांश अर्थात 100 महिलाएं 33-33 प्रतिशत स्नातक स्तरीय हैं तथा 68-32 % महिलाएं माध्यमिक उच्च शिक्षा तथा शोध स्तर की शिक्षा प्राप्त हुई है मात्र 13-33 % महिलाएं ही अशिक्षित हैं। निष्कर्षिता हम समझते हैं कि निरंकारी महिलाओं का शैक्षिक स्तर उच्च स्तरीय है जो की उपयुक्त सारणी के परिणामों से स्पष्ट है

**निरंकारी आंदोलन से संलग्नित महिलाओं के व्यवसाय/कामकाज**

| क्रम सं0 | व्यवसाय/कामकाज | संख्या | प्रतिशत : |
|---|---|---|---|
| 1 | गृहणी | 30 | 10 % |
| 2 | खेतिहर/मजदूर | 80 | 26.67 % |
| 3 | नौकरी | 50 | 16.67 % |
| 4 | अध्ययनरत | 40 | 13.33 % |
| 5 | अन्य कार्य जिससे आय अर्जित हो | 100 | 33.33% |
| | योग | 300 | 100% |

उपर्युक्त सारणी के अध्ययन से यह ज्ञात हुआ है कि निरंकारी महिलाएं कई कार्य करती हैं जिससे आय अर्जित हो, जिसका प्रतिशत 33.33 % है तथा 13.33 प्रतिशत महिलाएं अभी अध्यनरत हैं। ग्रामीण महिलाएं ज्यादातर खेतीहर हैं या मजदूरी करती हैं। 26.67% किसी न किसी कार्य नौकरी को करके धन अर्जित करने में सक्षम है तथा पुरुषों पर आर्थिक जिम्मेदारियां अपेक्षापूर्ण कम हैं।

**निरंकारी आंदोलन से संलग्नित महिलाओं की वार्षिक आय**

| कम सं0 | आय प्रति वर्ष | संख्या | प्रतिशत : |
|---|---|---|---|
| 1 | 50000 ls de | 75 | 25 % |
| 2 | 50000 ls 100000 | 100 | 33.33 % |
| 3 | 100000 ls 150000 | 80 | 26.67 % |
| 4 | 150000 ls 200000 | 40 | 13.33 % |
| 5 | 200000 ls Åij | 5 | 1.66% |
| | योग | 300 | 100% |

उपर्युक्त सारणी से स्पष्ट है कि निरंकारी आंदोलन में 100000 प्रतिवर्ष आय वर्ग की महिलाओं की संख्या सर्वाधिक है, जबकि 2 लाख की वार्षिक आय के ऊपर केवल 1.66 परसेंट महिलाएं ही हैं जिससे यह स्पष्ट होता है कि निरंकारी मिशन की महिलाएं आर्थिक रूप से कमाने में पुरुषों के ऊपर अपेक्षा पूर्ण कम निर्भर हैं।

## निष्कर्षतः

प्रस्तुत शोध पत्र 300 महिलाओं के साक्षात्कार के विवरण पर आधारित है और इसमें निरंकारी महिलाओं से साक्षात्कार करने पर ज्ञात हुआ है कि, निरंकारी जगत में महिलाओं को पुरुषों के समान दर्जा दिया गया है तथा प्रत्येक कार्य में महिलायें भी संपूर्ण रूप से जिम्मेदारी निभाती हैं। महिलाओं की प्रस्थति में सुधार के लिए प्रत्येक सप्ताह में एक दिन महिला सत्संग के नाम से निर्धारित किया गया है, जिसका संपूर्ण नेतृत्व महिलाओं द्वारा ही किया जाता है। अवलोकन द्वारा ज्ञात हुआ है कि महिलाओं की संख्या निरंकारी संगोष्ठियों में अमूमन पुरुषों से ज्यादा ही होती है। सभी प्रकार की रूढ़िवादिताओं से महिलाओं को मुक्त रखा गया है तथा पुरुषों के समक्ष स्थान दिया गया है। निरंकारी महिलाओं की शिक्षा उच्चतर है और निर्णय लेने की क्षमता भी में बेहतर होती जा रही है। निरंकारी मिशन में महिलाओं को एक अच्छा जीवन जीने के लिए प्रेरित किया जा रहा है तथा उनके आध्यात्मिक, सामाजिक-आर्थिक, विकास में महिलाओं की दशा तथा दिशा बेहतर करने में निरंकारी आंदोलन प्रयासरत है।

## संदर्भ ग्रंथ

1. **कौशिक आशा** (2004) भाग II (सामाजिक सांस्कृतिक आधार भूमि), मुद्रक शीतल प्रिंटर्स (जयपुर)
2. 1 **बीना अग्रवाल** (स्त्री की गरिमा) अध्याय-5
3. 2**सुदेश बत्रा**अध्याय --6
4. सिद्धांतालंकार विद्यामार्तण्ड सत्यव्रत (1960) भारत की जनजातियां तथा संस्थायें (31वां अध्याय) भारतीय नारी की स्थिति वर्तमान तथा भविष्य। पेज नं (61652 – 9) प्रथम संस्करण प्रकाशक विजयकृष्ण लखनपाल एंड कंपनी विद्या विहार, 4 बलवीर ऐवेन्यू, देहरादून
5. **किश्वर मधु** (2023) "भारत में सामाजिक आंदोलन" सेज रावत पब्लिकेशन्स
6. **बसु अमृता** (2023) (ed) "भारत में सामाजिक आंदोलन" सेज रावत पब्लिकेशन्स

7. **देसाई नारी** (2023) (ed) "भारत में सामाजिक आंदोलन" सेज रावत पब्लिकेशन्स
8. **थापर रेमिला** (2023) (ed) "भारत में सामाजिक आंदोलन" सेज रावत पब्लिकेशन्स एग्जामिनेशन
9. शाह, घनश्याम (2023) भारत में सामाजिक आंदोलन संबंधित साहित्य की एक समीक्षा, रावत, पब्लिकेशन जवाहर नगर जयपुर
10. KAUR JOLLY SURJIT (2000) Sikh Revivalist Movements the Nirankari and Namdhari Movements in moments in Punjab in the Nineteenth century (A Social Religious study) Gyan publishing Housel New Delhi- 110002
11. रंजन, सिद्धार्थ (2010) वाराणसी के निरंकारी पंथियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन (वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय)
12. RANI KAVITA (2022) Sant Nirankari Mission And Its Impact On Society A Sociological Study, आरती पब्लिशिंग हाउस एण्ड डिस्टीब्यूटर्स